RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 April 2019, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd April 2019

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : सोलहवां
अंक : बारहवां
अप्रैल: 2019

5 बाबा जयमल सिंह जी ने यह पत्र अपने शिष्य सावन सिंह जी को लिखा था
सतगुरु से प्यार करना ही भजन है

9 बाबा सावन सिंह जी द्वारा एक प्रेमी को भजन–अभ्यास के बारे में लिखा पत्र
आगे बढ़ें और करें

13 बाबा सावन सिंह जी के मुखारविंद से
भाई मंझ

19 सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
कबीर का गुरु सन्त है

33 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से
तृष्णा

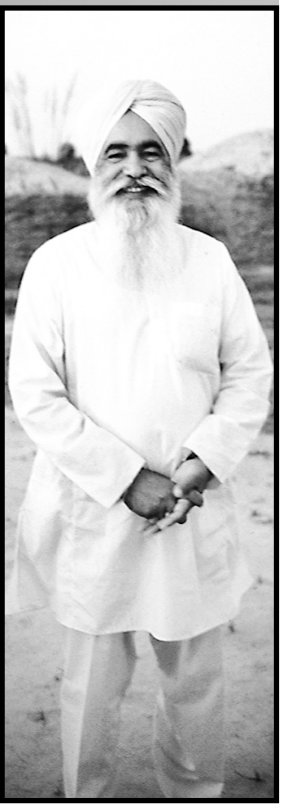

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **ज्योति सरदाना, परमजीत सिंह**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस - 1, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 - 205- मूल्य - पाँच रुपये

E-mail : dhanajaibs@gmail.com **Website :** www.ajaibbani.org

सावन शाह जी आओ

सावन शाह जी आओ, दर्श दिखाओ,
कई जन्मां दे, रोग मिटाओ, (2)

1. दर्श बिना सानूं, चैन ना आवे,
इक-इक पल, युग बीत दा जावे, (2)
काल दी नगरी चों, आण बचाओ,
कई जन्मां दे, रोग मिटाओ.....

2. मैं गुनाहागार तूं, बक्शनहारा,
समझो यतीम आ, देवो सहारा, (2)
बेड़ी मझधार चों, पार लगाओ,
कई जन्मां दे, रोग मिटाओ.....

3. डाकु लुटेरे, फिरन चुफेरे,
दया करो दाता, जीव हां तेरे, (2)
काल दे पंजे चों, आण छुड़ाओ,
कई जन्मां दे, रोग मिटाओ.....

4. गरीब 'अजायब' दी सुण अरजोई,
तेरे बिना किते, मिलदी ना ढोई, (2)
सावन शाह जी आओ, देर ना लगाओ,
कई जन्मां दे, रोग मिटाओ.....

बाबा जयमल सिंह जी ने यह पत्र अपने शिष्य सावन सिंह जी को लिखा था...

सतगुरु से प्यार करना ही भजन है

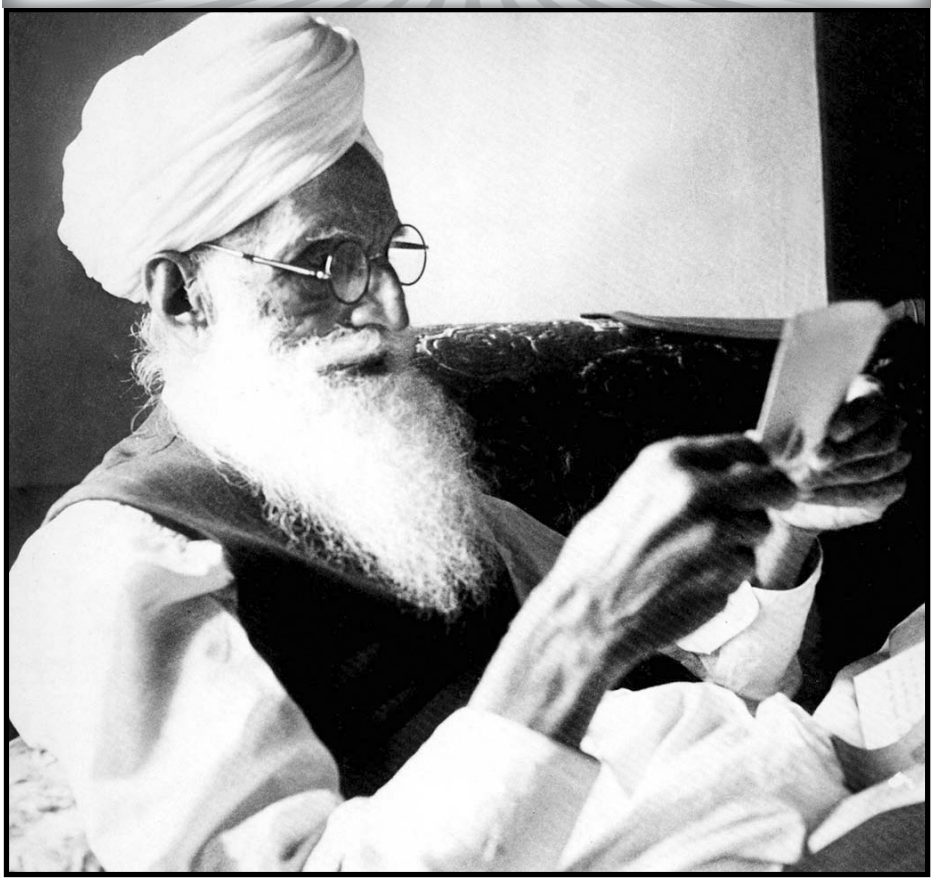

यहाँ सब ठीक है और हम हमेशा दीन दयाल अकाल पुरुष से आपकी खुशी और अच्छी सेहत के लिए प्रार्थना करते हैं। वह हमेशा दयालु है सबको माफ करने वाला और पापियों को बख्शने वाला है। राधा स्वामी अनामी सबसे ऊपर है उसकी दया करोड़ो ब्रह्मांडो पर बरस रही है। वह सब पर मेहरबान है, दयाल है और पापियों को मुक्ति देने वाला है।

आपने पत्र में लिखा हैं कि आप अपनी नौकरी छोड़कर मेरे साथ रहना चाहते हैं। नौकरी की वजह से आपको ज्यादा समय नहीं मिलता लेकिन आप सदा मेरे साथ हैं दूर नहीं। आपका कुछ लोगों के साथ लेन-देन है, जब तक यह हिसाब-किताब पूरा नहीं हो जाता आप मुक्त नहीं हो सकते।

परमात्मा जिस जीव पर दया करता है जिसे मुक्त करना चाहता है जिसे अपने आपमें मिलाना चाहता है कि आगे यह कोई जन्म न ले परमात्मा उसे किसी सन्त-सतगुरु से मिलवाता है।

सन्त-सतगुरु उस जीव को पाँच पवित्र शब्द का नाम देते हैं जिससे उसके कई कर्म कट जाते हैं लेकिन उसने जो भी लेन-देन चुकाना होता है वह नहीं मिटता। समर्थ सतगुरु अपनी आध्यात्मिक शक्ति की ताकत से अंदर ही उसकी सुरत को धुन के साथ जोड़ देते हैं। धुन से लंबे समय तक जुड़े रहने पर आत्मा पवित्र हो जाती है।

पूर्ण सतगुरु जीव का सारा लेखा-जोखा इसी शरीर में पूरा करवाता है। उसके पिछले कई जन्मों के बुरे कर्मों के फल का भुगतान करवाता है। उसे दुनियावी इच्छाओं से हटाकर सतगुरु के चरणों में लगा देता है फिर शब्द धुन के अभ्यास से दिन-प्रतिदिन उसकी सफाई करता है।

जैसे-जैसे शिष्य का गुरु के लिए प्रेम गहरा होता जाता है, सुरत पूरी तरह से पवित्र होने के बाद शब्द गुरु में मिल जाती है फिर सुरत 'चेतना' बन जाती है। तब गुरु इस शरीर को अपनी शक्ति से पाँच शब्दों द्वारा सच्चखंड ले जाते हैं। दुनियावी हिसाब-किताब को पूरा करने के लिए पूर्ण गुरु अपने प्यारे शिष्य को अपने शारीरिक रूप से दूर रखता है लेकिन शब्द धुन से दूर नहीं रखता।

आप नौकरी करते हुए मुझे हर मुमकिन सेवा दे रहे हैं और साथ-साथ पारिवारिक ड्यूटी भी निभा रहे हैं। आप जो भी करते हैं या आपके पास शरीर, मन और दौलत जो कुछ है सब सतगुरु का समझें। सोचें! मैं कुछ नहीं हूँ, मैं केवल एक एजेंट हूँ। आपको अपने अंदर से 'मैं' को पूरी तरह से निकालना होगा।

आपको जो पत्र भेजे जाते हैं आपको उन्हें फाड़ना नहीं चाहिए, जब मैं वहाँ आऊँगा तब आप मुझे वे पत्र पढ़कर सुनाना।

रोज अपनी सुरत को भजन-सिमरन में लगाएं फिर आपको शारीरिक दर्द बहुत कम महसूस होगा। आपको जब भी पत्र लिखना हो आप पत्र गुरुमुखी में लिखें, सप्ताह में एक बार पत्र जरूर लिखें। आप जब अपनी ड्यूटी शुरू करेंगे तब पत्र जरूर लिखना, तब मैं आपके पास आऊंगा।

आप कहते हैं कि आपको दिन-रात दर्शनों की बहुत ज्यादा तड़प होती है, यह तड़प भी भजन करने जैसी है। आपको दर्शनों का लाभ मिल रहा है **सतगुरु से प्यार करना ही भजन है**। यह तड़प आपको जल्दी ही सच्चखंड ले जाएगी।

मैंने आपके सवाल का जवाब छोटा करके दिया है। मैं जब आपके पास आऊंगा तब मैं आपको विस्तार से बताऊंगा। इस पत्र को बार-बार पढ़ना। ***

::

महाराज सावन सिंह जी ने इस पत्र के नीचे अपने हाथ से एक नोट लिखा कि यह पत्र मुझे हुजूर बाबा जयमल सिंह जी ने उस समय लिखा, जब मैं वैराग्य की भावना में आकर सरकारी नौकरी छोड़ना चाहता था।

बाबा सावन सिंह जी महाराज

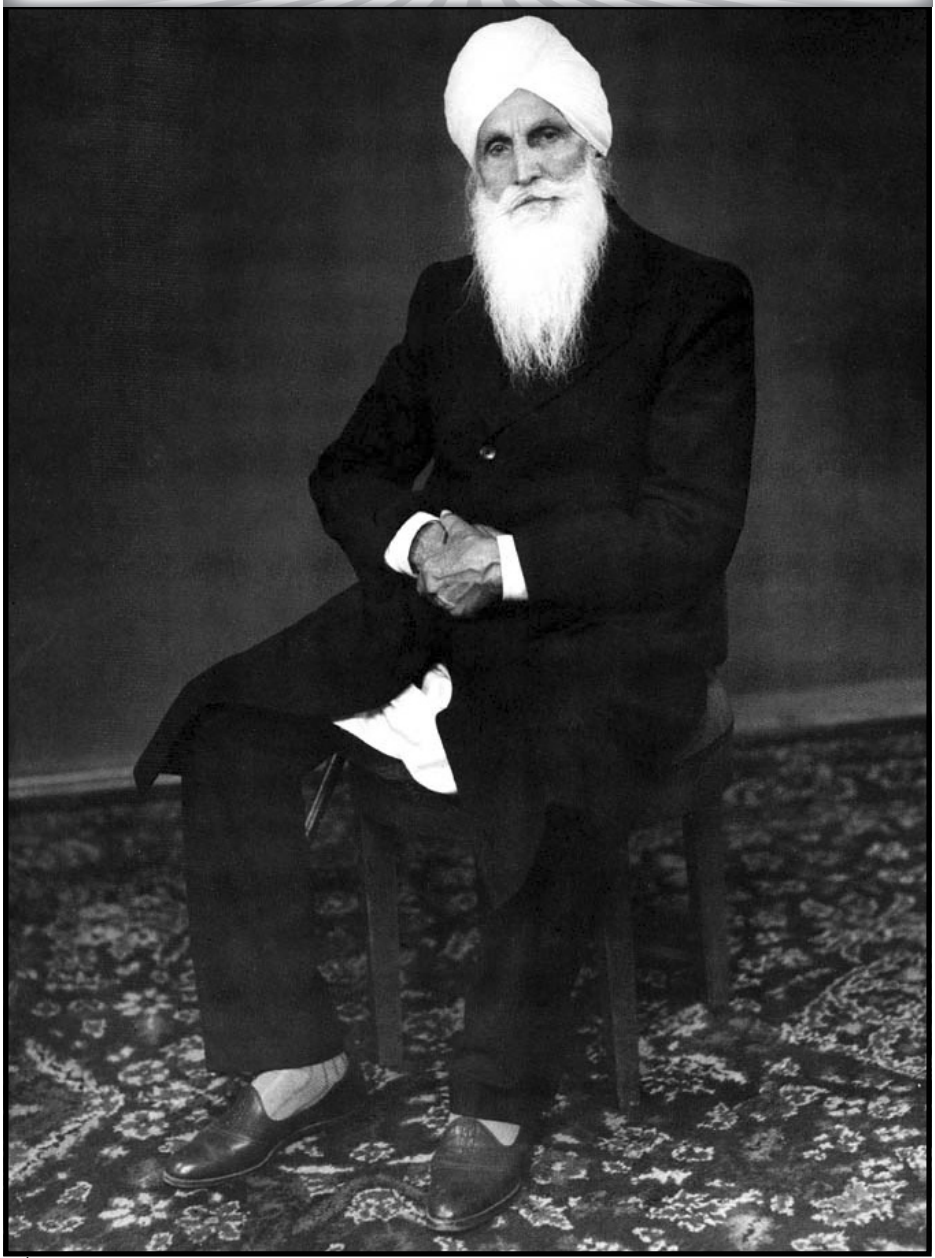

बाबा सावन सिंह जी द्वारा एक प्रेमी को भजन-अभ्यास के बारे में लिखा पत्र

आगे बढ़ें और करें

मेरे प्यारे बेटे,

मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि मैं किसी भी अमेरिका के प्रेमी को नजरअंदाज नहीं करना चाहता। मेरे ख्याल से मैंने तुम्हारे पत्र का जवाब दिया था, शायद! वह पत्र रास्ते में गुम हो गया होगा। तुम हर हाल में मुझे कुछ महीनों बाद पत्र अवश्य लिखना और अपनी रूहानी तरक्की की पूरी रिपोर्ट भेजना।

तुम जो भी सवाल पूछना चाहो जरूर पूछो। रूहानियत के मार्ग पर तुम्हारी अंदरूनी तरक्की के बारे में जानकर मुझे खुशी होगी, इसमें कोई शक नहीं कि तुम थोड़ी बहुत तरक्की कर रहे हो। असल में अंदर जो दिव्य प्रकाश और आनन्द तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं तुम्हें उन्हें प्राप्त करते हुए देखने के लिए मैं उत्सुक हूँ।

इस मार्ग जैसा कुछ भी नहीं है। इस मार्ग पर जो सच्चा सुख और संतोष मिलता है ऐसा सारी दुनिया में नहीं मिल सकता लेकिन इसे प्राप्त करने के लिए तुम्हें अंदर जाना पड़ेगा, यह तुम्हें बाहर से नहीं मिल सकता। सारी दुनिया इसे किताबों, धर्मस्थानों और समाजों में ढूंढ रही है लेकिन यह अंदर से ही प्राप्त होता है।

इसकी प्राप्ति निरंतर भजन-अभ्यास और बिना डगमगाए अपना ध्यान तीसरे तिल पर एकाग्र करने से होती है। जब तुम ऐसा करना सीख जाओगे यह खजाना जो तुम्हारा ही है तुम्हारी अंर्तात्मा को प्राप्त होगा, इतना प्राप्त होगा जितना तुमने स्वपन में भी नहीं सोचा होगा। कोई भी चीज तुम्हें रोक न पाए, कोई भी

दुनियावी रूकावट रास्ते में न आए जो तुम्हें अंदर जाने से रोके। मन की दृढ़ता से पूरी तरह भजन-अभ्यास में जुड़ जाओ बाकी सब चीजों को कम महत्व दो ताकि बाकी चीजें अपने आप पिघल जाएं और तुम्हें तंग न करें।

मुझे पता है कि तुम्हें दिक्कते हैं। तुम्हारे अंदर कुछ कमियां हैं जिन पर तुमने काबू पाना है और कुछ बाहर की चीजें हैं जिन्हें तुमने परास्त करना है। तुम कर सकते हो अगर तुम्हें अपने अंदर बैठे सतगुरु पर भरोसा है तो सतगुरु हर वक्त तुम्हारी मदद करेंगे।

कई बार जब तुम्हारे ऊपर बड़ी मुश्किलें या बुरा वक्त आएगा तो प्रकाश प्रकट होगा। तुम देखोगे कि तुम उन मुश्किलों से मुक्त हो जाओगे, कोई भी चीज तुम्हें निराश नहीं करेगी। नाम मिलना कोई मामूली बात नहीं। नाम का मिलना करोड़ों रूपये विरासत में मिलने जैसा है। तुम सतपुरुष के भाग्यवान बेटे हो सतपुरुष ने तुम्हें नाम प्राप्त करने के लिए और सतगुरु के साथ सच्चखंड जाने के लिए चुना है। कोई भी चीज तुम्हें वहाँ पहुँचने से नहीं रोक सकती, तुम चाहो तो जल्दी तरक्की कर सकते हो।

पहले अपने अंदर और बाहर की मुश्किलों को दूर करने की पूरी कोशिश करो फिर भजन-अभ्यास में जितने घंटे बैठ सको उतने घंटे बैठो। अपना ध्यान तीसरे तिल पर एकाग्र करो अपने मन को बाहर भटकने या डगमगाने न दो। अगर मन बाहर जाता है तो उसे तुरंत वापिस लाकर तीसरे तिल पर एकाग्र करो। थोड़ी देर में तुम्हारा मन स्थिर और एकाग्रचित हो जाएगा तब तुम्हें नीला आसमान, सूरज, चाँद, सितारे दिखाई देंगे फिर तुम्हें एक शानदार बिन्दु सहँसदल कमल और सतगुरु का नूरी स्वरूप दिखाई देगा

तुम्हें ये चीजें जरूर देखनी चाहिए। लगातार देखते रहो अपने मन में कोई संदेह या सवाल खड़ा न होने दो, यह निश्चित होगा।

जब तुम पहली मंजिल पर पहुंच जाओगे तब तुम्हें अंदरूनी आवाज सुनाई देगी, यह आवाज साफ और सुरीली सुनाई देगी यह संगीत तुम्हें आनन्द से भर देगा और तुम्हें बाकी कठिनाईयों से उभरने में मदद करेगा। यह एक ऐसी चीज है जो तुम्हें सारे शत्रुओं से लड़ने में बलवान बनाती है और तुम्हारी विजय निश्चित करती है। जैसे ही यह सुरीली आवाज तुम्हारे कानों में गूँजने लगेगी तुम्हारी कामयाबी बिल्कुल निश्चित हो जाएगी।

तुम्हें इस सर्वोच्च ध्येय को जितनी जल्दी हो सके हासिल करना चाहिए। कुछ लोग यहाँ जल्दी पहुँचते हैं और कुछ लोग देर से पहुँचते हैं। यह अपनी-अपनी मेहनत और अपने-अपने कर्मों के भार के ऊपर निर्भर करता है। तुम्हें ज्यादा संघर्ष करने की जरूरत नहीं तुम काफी संघर्ष करके आगे आ गए हो और अंदर सतगुरु हमेशा तुम्हारे स्वागत के लिए मौजूद है।

जब तुम सतगुरु से मिलकर उनसे रूबरू बातें करोगे जैसे एक आदमी दूसरे आदमी से बात करता है। सतगुरु तुम्हारे सारे सवालों का जवाब देने और मार्ग दर्शन करने के लिए हमेशा तैयार हैं। सतगुरु अब भी मौजूद हैं लेकिन जब तक तुम अपने और सतगुरु के बीच के पर्दे को हटा नहीं देते तब तक सतगुरु को देख नहीं सकते। तुम्हें बहुत बड़ा ईनाम प्राप्त होगा फिर तुम आसानी से कह सकोगे कि **आगे बढ़ें और करें।**

तुम्हारा प्यारा,

सावन सिंह

***

बाबा सावन सिंह जी महाराज

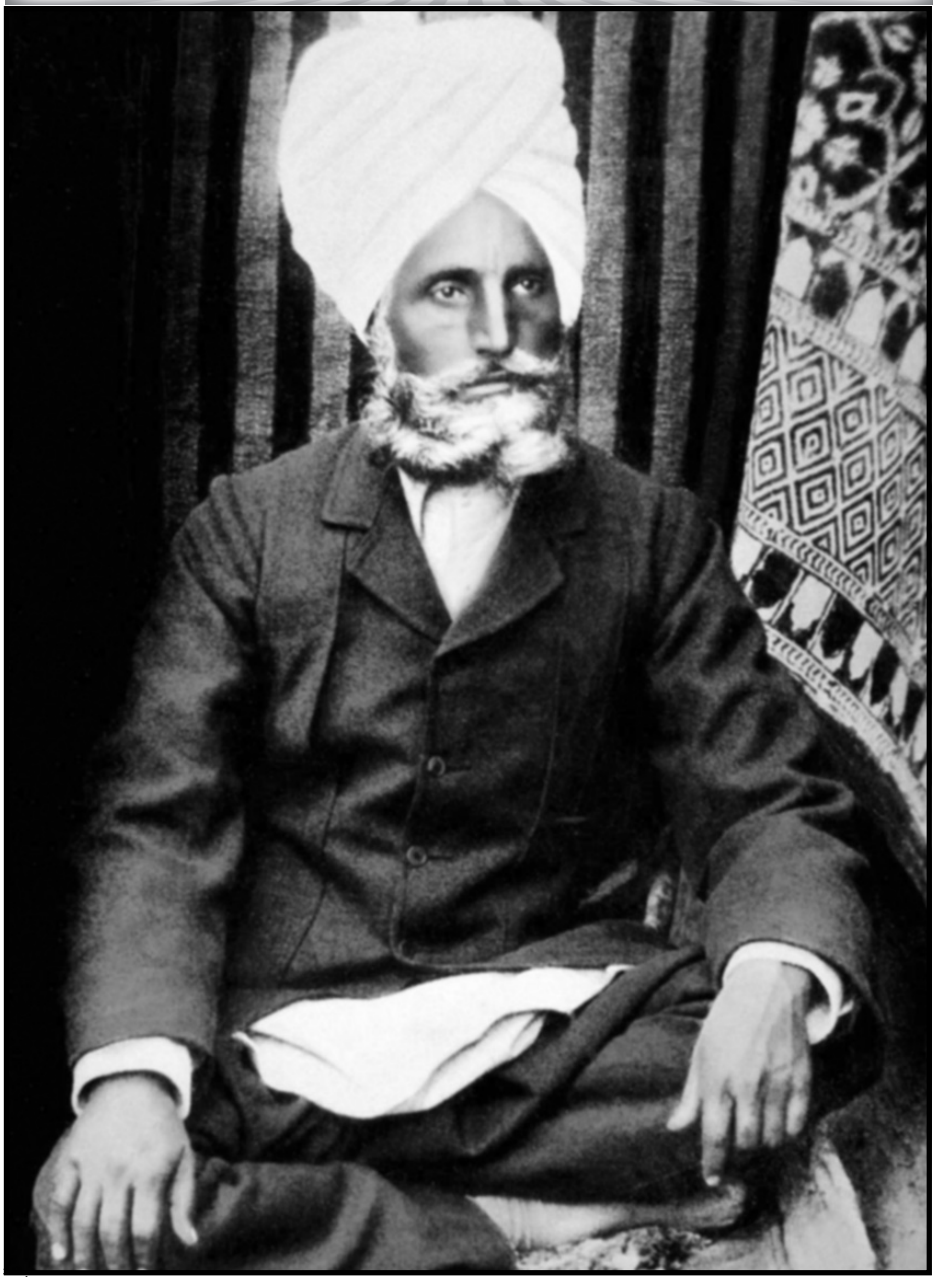

बाबा सावन सिंह जी के मुखारविंद से

भाई मंझ

भाई मंझ सिर्फ दौलतमंद ही नहीं था बल्कि एक गाँव का मालिक भी था। भाई मंझ सखी सरवर की मजार का भक्त था। एक दिन उसे गुरु अर्जुनदेव जी का सतसंग सुनने का मौका मिला। उसके ऊपर सतसंग का गहरा असर हुआ और उसने गुरु अर्जुनदेव जी से नामदान के लिए प्रार्थना की।

गुरु अर्जुनदेव जी ने भाई मंझ से पूछा, ''अभी तुम किसे मानते हो?'' भाई मंझ ने बड़ी नम्रता से कहा, ''मैं सखी सरवर का भक्त हूँ।'' गुरु अर्जुनदेव जी ने कहा, ''मैं तुम्हें तभी नामदान दूंगा पहले तुम अपने घर जाकर वह मजार तोड़कर आओ जो तुमने अपने घर में बनाई हुई है।''

भाई मंझ जल्दी से अपने घर गया और उसने उस कमरे में बनी मजार को तोड़ दिया। वहाँ खड़े गाँव के लोगों ने भाई मंझ को खबरदार किया कि तुमने यह जो कुछ किया है तुम्हें इसका हर्जाना भुगतना होगा। भाई मंझ ने बहुत मजबूत होकर कहा, ''मैंने जो कुछ किया है सोच समझकर किया है और मैं इसका अंजाम भुगतने के लिए भी तैयार हूँ।''

जब भाई मंझ गुरु अर्जुनदेव जी के पास वापिस पहुँचा तो उन्होंने उस पर नामदान की दया की लेकिन यह भी तय था कि उसके और इम्तिहान लिए जाएंगे। थोड़े दिनों बाद उसका घोड़ा मर गया फिर उसके कुछ बैल मर गए, चोर उसके घर से कीमती सामान चुराकर ले गए। गाँव के लोगों ने भाई मंझ को समझाया कि यह सखी सरवर के अनादर का परिणाम है तुम दोबारा से

अपने घर में सखी सरवर की मजार बना लो। भाई मंझ ने कहा मुझे इन बातों की कोई परवाह नहीं। मेरा गुरु सब कुछ जानता है कि मेरे लिए क्या अच्छा है।

भाई मंझ के ऊपर एक के बाद एक मुसीबत आती गई, वह थोड़े ही समय में बेसहारा हो गया बल्कि कई लोगों का कर्जदार भी हो गया। लोगों ने उससे अपना कर्ज वापिस माँगा और कहा कि हमें अभी हमारे पैसे वापिस करो या गाँव छोड़कर चले जाओ। उस समय भाई मंझ के कई दोस्तों ने उसे समझाया अगर तुम दोबारा से अपने घर में मजार बना लो तो सब ठीक हो जाएगा।

भाई मंझ अपने इरादे में मजबूत रहा और उसने अपना गांव छोड़ना बेहतर समझा। भाई मंझ ने अपनी पत्नी और बेटी के साथ अपना बचा-खुचा सामान लेकर दूसरे गाँव की शरण ली। भाई मंझ एक अमीर जमींदार था उसे कभी कोई व्यापार सीखने की जरूरत नहीं पड़ी थी लेकिन अब जरूरी हो गया था कि वह अपनी आमदनी का कुछ जरिया बनाए। भाई मंझ घास काटकर, उसे बेचकर अपना गुजारा करने लगा।

इस तरह कई महीने बीत गए। गुरु अर्जुनदेव जी ने अपने एक शिष्य को चिट्ठी देकर भाई मंझ के पास भेजा और शिष्य को यह आदेश दिया कि भाई मंझ से बीस रूपये लेकर ही उसे यह चिट्ठी देना अगर वह तुम्हें बीस रूपये न दे सके तो यह चिट्ठी वापिस ले आना। भाई मंझ उस चिट्ठी को देखकर बहुत खुश हुआ लेकिन उसके पास चिट्ठी लेने के लिए पैसे नहीं थे।

भाई मंझ ने अपनी पत्नी के साथ सलाह की तो पत्नी ने कहा, ''मैं अपने और बेटी के गहने लेकर सुनार के पास जाती हूँ देखती हूँ वह मुझे कितने पैसे देगा।'' सुनार ने उसे पूरे बीस रूपये दिए।

भाई मंझ ने बीस रूपये देकर वह चिट्ठी ले ली। अब भाई मंझ कभी उस चिट्ठी को चूमता है कभी माथे से लगाता है कभी उसे अपने दिल पर लगाता है। ऐसा करके उसे बहुत खुशी मिली।

इसी तरह दो साल और बीत गए, गुरु अर्जुनदेव जी ने भाई मंझ को दूसरी चिट्ठी भेजी जिसके लिए उसे पच्चीस रूपये देने थे। भाई मंझ के पास पैसे नहीं थे। भाई मंझ को याद आया कि गाँव के मुखिया ने कभी उसकी बेटी का रिश्ता अपने बेटे के लिए माँगा था। भाई मंझ ने अपनी पत्नी को मुखिया की पत्नी से मिलने के लिए भेजा कि वह बेटी की शादी की बात करे जबकि मुखिया की कोई खास हैसियत नहीं थी लेकिन शादी के बदले पच्चीस रूपये माँगने के लिए कहा। मुखिया ने खुशी-खुशी पच्चीस रूपये दे दिए और भाई मंझ ने अपने गुरु की चिट्ठी प्राप्त कर ली।

गुरु ने अभी भाई मंझ के और भी इम्तिहान लेने चाहे। गुरु अर्जुनदेव जी ने अपने एक शिष्य से कहा कि भाई मंझ के पास जाकर कहो कि वह मेरे दरबार में आए। भाई मंझ खुशी-खुशी जल्दी से अपनी पत्नी और लड़की को लेकर गुरु के दरबार में पहुँच गया। वहाँ उसकी पत्नी और बेटी लंगर में सेवा करने लगी और भाई मंझ जंगल से लंगर के लिए लकड़ी काटकर लाने लगा।

कुछ दिनों के बाद गुरु साहब ने पूछा, ''भाई मंझ! खाना कहाँ से खाता है?'' प्रेमियों ने बताया कि भाई मंझ हमारे साथ लंगर में खाना खाता है। गुरु साहब ने कहा, ''भाई मंझ! सच्ची सेवा नहीं कर रहा वह सेवा के बदले लंगर में से खाना खा रहा है इसका मतलब वह मजदूरी कर रहा है।''

भाई मंझ ने जब अपनी पत्नी से यह बात सुनी तो उसने कहा, ''मुझे सेवा के बदले कुछ नहीं चाहिए क्योंकि गुरु ने मुझे नाम का

अनमोल खजाना दिया है। हम अपना खाना किसी और तरह से कमाकर खाएंगे।'' उस दिन से भाई मंझ और उसका परिवार दिन में पहले की तरह लंगर की सेवा करते। रात को भाई मंझ जंगल में लकड़ी काटने जाता और उस लकड़ी को बाजार में बेचकर कमाए हुए धन से खाना खाने का सामान खरीदता।

कुछ हफ्तों के बाद जब भाई मंझ जंगल से लकड़ी काटकर लकड़ी का गट्ठा अपने सिर पर रखकर आ रहा था तो बहुत तेज तूफान आया। भाई मंझ ने बहुत बहादुरी से तूफान का सामना किया लेकिन खाना न खाने की वजह से वह बहुत कमजोर हो चुका था, वह लकड़ियों के गट्ठे समेत कुएं में गिर गया।

जो कुछ भी हुआ गुरु साहब को तो पहले से ही पता था। गुरु साहब ने कुछ शिष्यों को इकट्ठा किया और उनसे कहा, ''जल्दी करो! एक लकड़ी का तख्ता और रस्सी लेकर इसी वक्त मेरे पीछे जंगल में आओ।'' जब जंगल में कुँए के पास पहुँचे तो गुरु साहब ने एक शिष्य से कहा, ''भाई मंझ कुँए के बिल्कुल नीचे है जोर से आवाज देकर उससे कहो कि हम रस्सी से बाँधकर एक तख्त नीचे फेंक रहे हैं वह उस तख्त को मजबूती से पकड़ ले हम उसे बाहर खींच लेंगे।'' शिष्य ने ऐसा ही किया लेकिन उसने ऐसे भी शब्द बोले जो गुरु ने उसे अकेले में कहे थे। भाई मंझ! तुम कितनी बुरी हालत में हो, गुरु ने तुम्हारे साथ क्या बर्ताव किया है, तुम ऐसे गुरु को भूल क्यों नहीं जाते?

भाई मंझ चिल्लाया, ''तुम क्या कह रहे हो? ऐसा कभी नहीं हो सकता। तुम लोग अहसान फरामोश हो मेरे सामने गुरु के लिए ऐसे अनादर भरे शब्द कभी नहीं बोलना। ऐसे शर्मनाक शब्द सुनकर मुझे बहुत कष्ट होता है।''

फिर भाई मंझ ने कहा कि पहले लकड़ियां निकालो क्योंकि ये गुरु के लंगर के लिए हैं। मैं नहीं चाहता कि ये लकड़ियां गीली हो जाएं। पहले लकड़ियों को निकाला गया फिर भाई मंझ को खींचकर कुँए से निकाला।

जब भाई मंझ अपने प्यारे सतगुरु के रूबरू हुआ तब गुरु ने कहा, ''भाई मंझ! तुम हिम्मत, विश्वास और सतगुरु की भक्ति से सब इम्तिहानो में पास हो गए हो तुम चाहो तो मैं खुश होकर ईनाम के तौर पर तुम्हें तीनों लोकों की बादशाहत देना चाहूँगा।''

भाई मंझ ने कहा, ''मेरे प्यारे सतगुरु! यह कलयुग है। यहाँ किसी में इतनी ताकत नहीं कि वह सतगुरु के इम्तिहानों में खरा उतर सके इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि आगे किसी शिष्य से ऐसे इम्तिहान न लिए जाएं।''

भाई मंझ की इस बात से गुरु अर्जुनदेव जी बहुत खुश हुए। आप भाई मंझ को बहुत बड़ा ईनाम देना चाहते थे। गुरु साहब ने फिर कहा, ''भाई मंझ! तुम मुझसे कोई वरदान माँगो, तुम्हें वरदान देकर मुझे बहुत खुशी होगी।''

भाई मंझ गुरु अर्जुनदेव जी के पैरों में गिर गया और आँखों से आँसू बहाते हुए बोला, ''मेरे सतगुरु मैं आपसे क्या वरदान माँग सकता हूँ? मुझे केवल आप चाहिए, मुझे और किसी चीज की इच्छा नहीं।'' भाई मंझ के ये शब्द सुनकर गुरु साहब ने उसे अपने गले से लगाकर कहा, ''मैंने तुझे अपना प्रतिनिधि बना दिया है, तू जिसे नाम देगा मैं उसकी संभाल करूंगा।''

गुरु प्यारा मंझ को, मंझ गुरु प्यारा।
मंझ जगत का बोएथा, घट घट से न्यारा।।

***

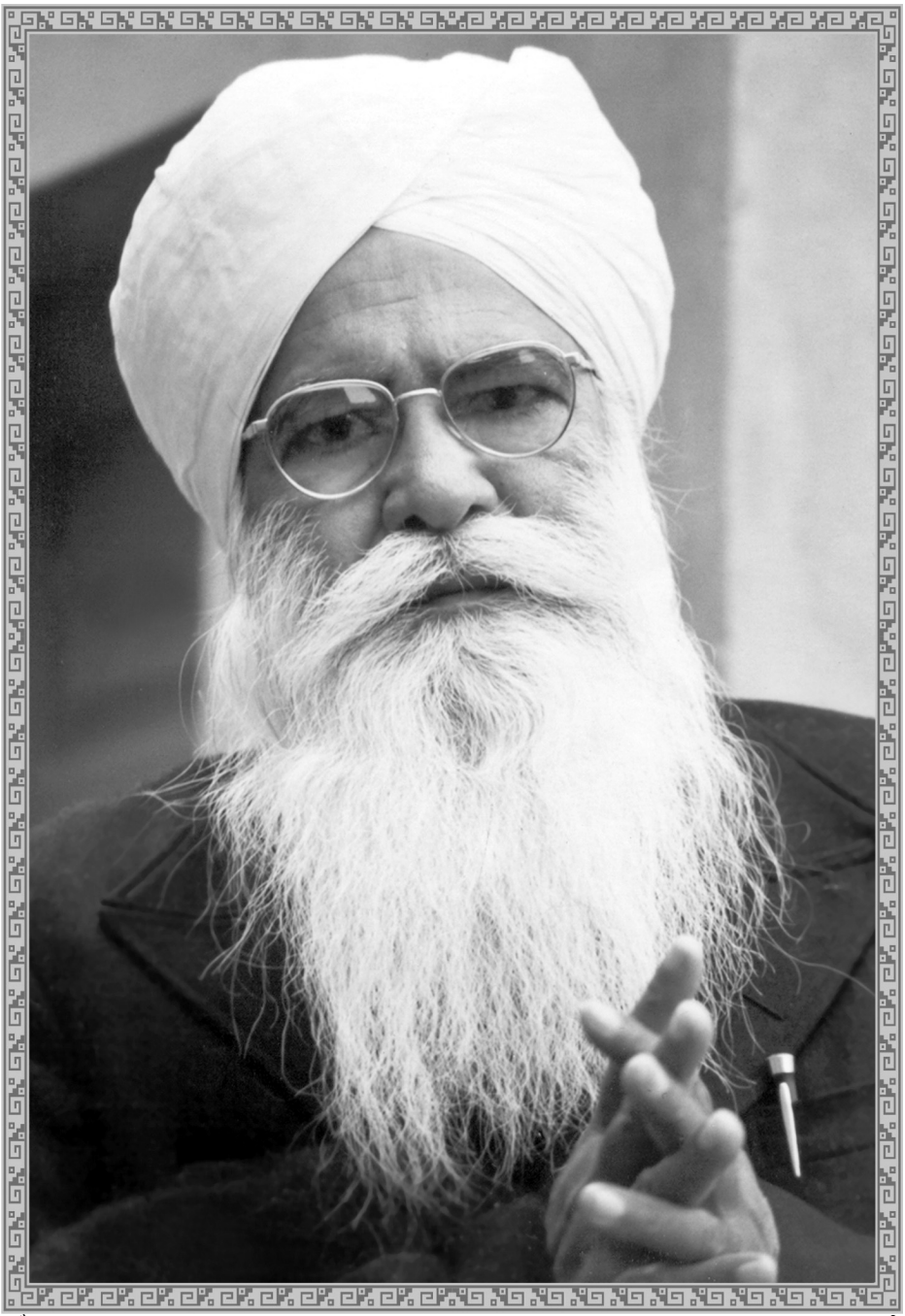

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

कबीर का गुरु सन्त है

कबीर साहब की बानी

11 अक्टूबर 1976

कामी का गुरु कामिनी, लोभी का गुरु दाम।।
कबीर का गुरु सन्त है सन्तन का गुरु नाम।।

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे जब भी दुनिया में आते हैं उनका मकसद कोई नई कौम बनाने का नहीं होता, न ही वे दुनिया को सुखों की नगरी बनाने के लिए आते हैं और न ही वे मान-बड़ाई प्राप्त करने के लिए आते हैं। अगर महात्मा का मकसद इस दुनिया को सुखों की नगरी बनाने का होता तो यह दुनिया सुखों की नगरी बन जानी चाहिए थी। इस दुनिया में गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, स्वामी जी महाराज और भी बड़ी-बड़ी चोटी के महात्मा आए लेकिन दुनिया तो वहीं खड़ी है। यह दुनिया न सुखों की नगरी बनी है और न बन ही सकती है।

महात्मा के आने का मकसद यह है कि परमात्मा सच्चखंड में जिन रूहों का चुनाव कर लेता है जो रूहें मालिक से मिलने के लिए पुकार करती हैं। उन रूहों को लेने के लिए परमात्मा कभी किसी महात्मा का तन धारण करके आता है तो कभी किसी महात्मा का तन धारण करके आता है।

हम इंसान हैं इसलिए परमात्मा भी संसार में इंसान बनकर आता है। अगर परमात्मा गाय-भैंस के चोले में आए तो हम उसकी बोली न समझ सकें अगर वह देवी-देवता बनकर आए तो हम उसे देख न सकें इसलिए वह हमारे जैसा इंसान बनकर हमारे सामने बैठकर हमें समझाता है।

युगों-युगों से संसार में वलि पीर-पैगम्बर सन्त-महात्मा आए यह कोई नई बात नहीं। ऐसा नहीं कि पहले सन्त आए थे अब नहीं आएंगे। जब तक संसार है महात्मा जीवों को लेने के लिए आते हैं। ऐसा नहीं कि पहले महात्माओं ने जीवों पर दया-मेहर की आज के महात्मा जीवों पर दया-मेहर नहीं करेंगे।

जिस परमात्मा ने यह दुनिया बनाई है उसे इस दुनिया को चलाने का बहुत फिक्र है। इस दुनिया में जिन जीवों को मालिक से मिलने की तड़प है, प्यार है वे चाहे दुनिया के किसी भी कोने में जन्म ले लें परमात्मा उनकी चाबी मरोड़कर महात्मा के चरणों में ले आता है। यह सब कुछ परमात्मा हर जीव के अंदर बैठकर खुद कर रहा है। जिसे परमात्मा ने नहीं मिलना, जिसे उसने अपने चरणों से दूर रखना है चाहे वह महात्मा के पड़ोस में पैदा हो जाए, चाहे महात्मा के घर में ही क्यों न जन्म ले ले उसने कभी भी महात्मा से फायदा नहीं उठाना।

महाराज सावन सिंह जी का एक चपरासी था। वह बहुत साल तक आपका चपरासी रहा लेकिन उसने नाम नहीं लिया। कई सेवकों ने आपसे विनती की, ''सच्चे पातशाह! यह बारह साल तक आपका चपरासी रहा लेकिन इसने नाम नहीं लिया।'' हुजूर महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''चाहे यह हमारे पास एक जन्म और भी क्यों न रह जाए इसने नाम नहीं लेना, इसकी किस्मत में नाम नहीं है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

कर्म धर्म सब वंदना नाम तुल न समसरे।
नानका जिन नाम मिलया कर्म होया धुर तदे।।

भाग्य के बिना नाम नहीं मिलता। जिस तरह तंदरूस्ती या बीमारी हर एक के भाग्य में नहीं इसी तरह नाम भी हर एक के

भाग्य में नहीं। सन्तों के दरबार में आकर भी हम सब नाम हासिल नहीं करते। सोच-विचार की बात है सन्त-महात्मा हमें नाम को हासिल करने का साधन और तरीका बताते हैं। नाम तो सतगुरु ही पैदा करता है। सतगुरु ने हमें जो रास्ता बताया है हम उसे तय नहीं करते उस रास्ते पर ही बैठ जाते हैं।

जैसे किसी ने हमें बताया कि यह सड़क सीधी दिल्ली की तरफ जाती है। वही आदमी समझदार है जो बताए मुताबिक दिल्ली पहुँच जाए। अगर हम वहीं बैठे हुए यह कहे जाएं कि रास्ता बहुत अच्छा है, रास्ता बताने वाला भी बहुत अच्छा है। हमें भी अपनी मंजिल पर पहुँचना चाहिए।

हम मंजिल पर क्यों नहीं पहुँचते? सन्त-महात्मा ने दया करके हमें हमारे घर का सीधा रास्ता बता दिया। हम सफर तय नहीं करते वहीं गुण गाना शुरु कर देते हैं कि महात्मा बहुत अच्छे हैं बहुत अच्छा रास्ता बताते हैं। सोचकर देखें! महात्मा अच्छे हैं, रास्ता भी अच्छा बताया है लेकिन हमें अपनी मंजिल पर पहुँचना चाहिए।

हम मंजिल तक क्यों नहीं पहुँचते, कौन-कौन सी घाटियां हैं जो हमें रास्ते में रोक लेती हैं? स्वामी जी महाराज कहते हैंः

गुरु को ऊपर ऊपर गाता, गुरु को दिल भीतर न लाता।

सब ऊपर-ऊपर से ही कहते हैं कि हमारा गुरु, हमारा गुरु। हमें गुरु से बहुत प्यार है लेकिन जब मन का सामना करना पड़ता है तब पता लगता है? कबीर साहब कहते हैं कामी का गुरु कामिनी। जब विषय भोग लेते हैं तब कौन हमारा गुरु हुआ? सन्त कहते हैं जब आपको काम तंग करता है तब एक तरफ गुरु को खड़ा करें और एक तरफ मन को खड़ा करें अगर बुराई करते हैं तो आपका

गुरु कौन हुआ? बुराई की तो बुराई हमारा गुरु हुई। काम भोगा तो औरत गुरु हुई। लोभी आदमी किसी गुरु-पीर का नहीं, पैसा ही उसका गुरु है। उसे पैसा गुरु दे या कोई और दे वही उसका गुरु-पीर है, उसका उसके साथ ही प्यार है। सुथरा फकीर कहता हैः

कोई जिए या मरे सुथरा घोल पतासा पिए।

कबीर साहब कहते हैं कि **मेरा गुरु सन्त है**, सन्तों का गुरु नाम है। नाम ने पूरी दुनिया की रचना पैदा की है। गुरु न बाहर है और न बाहर हो ही सकता है। जो लोग गुरु को बाहर पकड़कर बैठ जाते हैं वे कभी भी कामयाब नहीं होते। गुरु शब्द-नाम होता है। गुरु ने देह तो हमें समझाने के लिए धारण की होती है। सन्तों को तो पता है कि इनकी आत्मा हमारी शिष्य है।

अंतर शब्द सुरत धुन चेला सतगुरु झगड़ नबेड़े।

शब्द भी अंदर है आत्मा भी अंदर है। जब हम अपनी आत्मा को नौं द्वारों में से निकालकर आँखों के पीछे लाकर शब्द गुरु के साथ जोड़ते हैं फिर हमें पता लगता है कि अंदर गुरु अच्छी तरह सारे झगड़े निपटा देता है। गुरु कहता है, ''बेटा! इस तरफ जाना है उस तरफ नहीं जाना, तेरा रास्ता इस तरफ से जाता है।'' गुरु सिर्फ लफ्ज़ ही नहीं बताते हर मंजिल पर साथ होकर हमें हमारे घर पहुँचा देते हैं, यह गुरु की ड्यूटी होती है। अब हमने सोचना है क्या हमारे अंदर ये बिमारियां हैं? हमने अपने अंदर झाँकना है।

सहकामी दीपक दशा सोखे तेल निवास।
कबीर हीरा सन्त जन सहजे सदा प्रकाश।।

अगर सौ कतरा खुराक का खाएं तो एक कतरा खून का बनता है। सौ कतरा खून से एक कतरा वीर्य बनता है। सौ कतरा

वीर्य हो तो उसका एक कतरा महावीर्य का बनता है। यह महावीर्य इंसान के दिमाग में होता है, यह मणि की तरह चमकता है। इसे खो देना महापाप है। कामी की हालत दीपक की तरह है जिस तरह दीपक की बत्ती जलती है वह साथ-साथ तेल सोखती रहती है। इसी तरह कामी जैसे-जैसे भोग भोगता है इसकी ताकत घटनी शुरू हो जाती है, यह नाम की चढ़ाई के काबिल नहीं हो सकता। हम सुबह उठकर कहते हैं कि हमसे उठा नहीं जाता, कमर दुखती है। इसकी वजह यह है कि हम कुल्हाड़ी से अपनी जड़ें काट रहे हैं, इंसान का शरीर सितार की तरह खोखला हो जाता है। योगी लोग इसे रखने के लिए रातों को जागते हैं, भूखें काटते हैं।

सन्त बहुत जोर देकर कहते हैं कि अभ्यासी के लिए इस तरफ परहेज करना बहुत जरूरी है। सन्त इस प्रकाश, इस नूर को संभालकर रखते हैं। जिन लोगों ने अभी नाम नहीं लिया अगर वे अपने वीर्य का धन रखते हैं तो उनके अंदर वैसे ही प्रकाश होता है जो मणि की तरह चमकता है, वे हमेशा खुश रहते हैं। अगर वीर्य की संभाल करने वालों को नाम मिल जाए तो सोने पर सुहागा है।

कामी कुत्ता तीस दिन, अंतर होय उदास।
कामी नर कुत्ता सदा, छहः ऋतु बारह मास।।

कबीर साहब कहते हैं, ''पशु भी मर्यादा में रहते हैं। कुत्ते की हालत देख लें! वह साल में एक महीना काम के लिए रहता है। इंसान को पूरी दुनिया का सरदार बनाया गया है लेकिन यह तो कुत्ते से भी बुरा है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब पेट में बच्चा हो तब इंसान को पाँच साल तक औरत के पास नहीं जाना चाहिए।

अगर जाता है उस दौरान बच्चा ठहर जाता है तो माता का दूध खारा हो जाएगा अगर बच्चा पैदा होगा तो नालायक होगा।''

आजकल हम जो कहते हैं कि मेरी औलाद मेरा कहना नहीं मानती उसका कारण यही है कि हम संयम नहीं रखते। हमने आजकल बच्चों का व्यापार बना रखा है। सड़ी-गली औलाद पैदा बाद में होती है पहले हकीमों के पास जाना पड़ता है, यह सब हमारी अपनी बेवकूफी है। कोई कहता है कि हमने अपने पिता की बहुत अच्छी सेवा की है। सोचकर देखें! आपके पिता ने आपको अच्छे तरीके से पैदा किया होगा। कबीर साहब कहते हैंः

पशु घड़ेंदा नर घड़ा चूक गया सींग पूँछ।
अक्ल वही है वान की बिना सींग बिन पूँछ।।

परमात्मा बनाने तो पशु लगा था लेकिन इंसान बना दिया। वह सींग और पूँछ लगाना भूल गया लेकिन अक्ल पशुओं जैसी है सींग और पूँछ नहीं है अगर ये दोनों लग जाएं तो हर किसी को पता लग जाए कि यह इंसान नहीं पशु है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

करतूत पशु की मानस जात, लोक विचारा करे दिन रात।।

हमारी ऐसी करतूतें हैं। हम अपने अंदर झाँककर देखें! क्या हमें गुरु के साथ प्यार है? भजन करना कोई खाला जी का बाड़ा नहीं। आप आगे बताएंगे कि सूरमा आदमी ही भजन कर सकता है।

कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय।।

काम की गिरावट नीचे की तरफ है नाम की चढ़ाई ऊपर की तरफ है, कामी भक्ति कर ही नहीं सकता। जब आत्मा नौं द्वारों से

नीचे गिर ही गई तो भक्ति कैसे कर सकता है? क्रोधी भक्ति नहीं कर सकता, क्रोध से रूह फैल जाती है और लोभी आदमी इस तरफ आ ही नहीं सकता अगर भूला-भटका आ भी जाएगा तो भजन में बैठा हुआ भी पैसों की माला फेरता रहेगा। वह बैठा हुआ सोचता रहेगा किसी न किसी तरह मेरा दाँव लगे। वह सतसंग में आकर भी माया की ठीकरियां इकट्ठी करने में लगा रहेगा।

माया महाठगनी है, इसने पीर-फकीर, बड़े-बड़े वलि पैगम्बरों को ठग लिया। लोग माया के पीछे धक्के खाते फिरते हैं। माया लोभ पैदा करती है, लोभ अहंकार पैदा करता है, अहंकार आगे क्रोध को उकसाता है; सारी दुनिया आपस में लड़ने में लगी हुई है।

कबीर साहब कहते हैं, ''कामी, क्रोधी, लालची भक्ति नहीं कर सकते। कोई सूरमा बहादुर आदमी ही भक्ति कर सकता है। सूरमा वह है जो कम खाता है, कम सोता है और रात को जागता है।'' अब हमारी क्या हालत है? हर इन्द्री हमसे अपना काम लेकर एक तरफ हो जाती है। काम इन्द्री अपना काम ले लेती है। जुबान इन्द्री अच्छे खानों पर ले जाती है। आँख की इन्द्री अच्छे रूप पर ले जाती हैं और दूसरी इन्द्रियां अपने-अपने ऐशों पर ले जाती हैं।

धर्मराज के दरबार में जाकर ये इन्द्रियाँ हमारे खिलाफ गवाही देती है। कान कहते हैं क्या तुमने हमसे बुरा काम नहीं लिया? जुबान कहती है क्या तूने मुझसे यह काम नहीं लिया? इसी तरह दूसरी इन्द्रियां कहती हैं क्या तूने हमसे यह काम नहीं लिया? जब यमों ने पकड़ा होगा तो यह किस तरह मुकरेगा? जिनके सामने आपने कोई ऐब किया है वही आकर आपको बताएंगे तो आप कैसे मुकरेंगे? सूरमें बनें बहादुर बनें; सन्तमत सूरमे बहादुरों का मत है।

भक्ति बिगाड़ी कामिया, इन्द्री केरे स्वाद।
हीरा खोया हाथ से, जन्म गँवाया बाद।।

कलयुग में सन्त-महात्माओं ने दया करके आम लोगों को नामदान दे दिया और यह भी बता दिया कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आपके दुश्मन हैं। इनमें से काम और क्रोध दो बड़े दुश्मन हैं और लोभ भी इनके बराबर ही है। सन्तों ने आकर हमारे ऊपर दया की लेकिन हम भक्ति करने की बजाय इन्द्रियों के स्वाद में लग गए। वह हीरा वीर्य का धन जिसकी मदद से हमने ऊपर चढ़ना था वह हमने अपने आप ही खो दिया। हम अपने आप ही अपना नुकसान कर रहे हैं। हम भंग के भाणें यह जन्म खोकर चले जाते हैं। हमने क्या कमाया? महात्मा कहते हैं :

पंजे विषय भोगेंदया उम्र गँवाई यार।
ऐह मन न रजया ते हुण कद रजसी यार।।

अभी तक यह मन तृप्त नहीं हुआ तो अब तृप्त होने की क्या आशा लगाई है? आग के ऊपर जितनी लकड़ियां डालेंगे उतना ही ज्यादा भाँबड़ मचेगा। सन्त किसी से यह नहीं कहते कि आप त्यागी बनें या गृहस्थी बने। वे कहते हैं यह आपकी मर्जी है।

महाराज .सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मुझसे कोई आकर पूछता है कि मैं शादी करवा लूं? तो मैं उसे यही सलाह देता हूँ कि तू देख ले! अगर तू बोझ उठा सकता है? कोई आकर पूछता है कि शादी न करवाऊं? तो मैं कहता हूँ तू देख ले अगर बिना शादी के गुजारा कर सकता है?''

कामी लज्जा न करे मन माही अहलाद।
नींद न माँगे बिस्तरा भूख न माँगे स्वाद।।

कबीर साहब कहते हैं, ''कामी बेशर्म होता है। चाहे बच्चे जागते हों, चाहे रिश्तेदार बैठे हों उसे शर्म नहीं आती। उसे अपना ही ख्याल होता है। जिस तरह नींद को बिस्तर की जरूरत नहीं, भूख को स्वाद की जरूरत नहीं। उसी तरह जब काम का वेग उठता है उस समय कामी अंधा हो जाता है। जिसके ऊपर काम चढ़ जाता है वह कर्म-धर्म सब कुछ छोड़ देता है।'' कालीदास जी कहते हैंः

काम त्रिया का रोग यारो, जिन्हू लग जाए मार मुकाम्दा ऐ।
बंदा भुख आराम नूं दूर करदा, करम शरम ते धरम गंवांदा ऐ।।

कामी कबहुँ न गुरु भजे, मिटे न संशय सूल।
और गुनह सब बखशिहों, कामी डाल न मूल।।

कामी कितना भी कहे कि मैं गुरु भक्ति करता हूँ। सोचकर देखें! कैसी गुरु भक्ति? कामी के मन में संशय लगा रहता है कि मैं बुराई कर रहा हूँ। मन की आदत है कि मन बता भी देता है कि हम ऐब कर रहे हैं। हर एक गुनाह बख्शा जाता है, कामी कभी नहीं बख्शा जाता। हमें बचना चाहिए संयम में रहना चाहिए।

काम क्रोध सूतक सदा, सूतक लोभ समाय।
सील सरोवर न्हाइये, तब यह सूतक जाय।।

आज जमाना ऐसा आ चुका है आमिल लोगों की कमी है। घर में कोई बच्चा पैदा हो जाए या कोई मर जाए तो कहते हैं कि सूतक हो गया है। कबीर साहब कहते हैं, ''अगर आपने काम भोग लिया, अगर आपके अंदर क्रोध का डेरा है, अगर आपके अंदर लोभ बसता है तो भी सूतक है। अगर आप अपने अंदर इन चीजों का सयंम रख लें तो आपकी देह पवित्र हो जाएगी लेकिन हम जन्म-मरण को ही सूतक समझते हैं।''

गुरु नानकदेव जी भी कहते हैं, ''निन्दा सुनना कान का सूतक है। झूठ बोलना जुबान का सूतक है। किसी को काम भरी आँखों से देखना आँखों का सूतक है। हमने इन सूतकों की तरफ तो कभी ख्याल ही नहीं किया कि हमें यह सूतक लगा हुआ है लेकिन हम जन्म-मरण को ही सूतक कहते हैं।''

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर हमने देह का पाप दूर करना है तो शील सरोवर में नहाकर संयम में रहें। काम, क्रोध, लोभ से बचें।''

जहाँ काम तहँ नाम नहिं, जहाँ नाम नहिं काम।
दोनों कबहूँ ना मिलें, रवि रजनी इक ठाम।।

कबीर साहब कहते हैं, ''जहाँ काम है वहाँ नाम का प्रकाश नहीं होता। जहाँ नाम है वहाँ काम पर नहीं मार सकता। जहाँ रात है वहाँ दिन नहीं। जहाँ दिन है वहाँ रात नहीं, ये एक जगह इकट्ठे नहीं रह सकते।''

हम सतसंगी लोग अभ्यास करते हैं सतसंग सुनते हैं फिर भी इस बिमारी के शिकार हैं। हमें इनसे बचना चाहिए।

नारि पुर्ष सब ही सुनो, यह सतगुरु की साख।
विष फल फले अनेक हैं, मत कोइ देखो चाख।।

कबीर साहब कहते हैं, ''हमारा उपदेश सिर्फ मर्दों के लिए ही नहीं है यह उपदेश औरतों के लिए भी है।''

परथाए साखी महा पुरख बोलदे सांझी सगल जहाने।

महात्मा का सतसंग हर औरत-मर्द के लिए है। महात्मा की शिक्षा सबके लिए है। अनेक किस्म के विषय है सिर्फ औरत को भोगना ही विषय नहीं। कबीर साहब कहते हैं:

काम काम सबको कहे काम न चीन्हें कोय।
जेती मन की कल्पना काम कहावे सोय।।

कल्पना भी काम है, उस कल्पना से भी बचना है। जैसे तन का रखना जरूरी है वैसे ही मन को रोकना भी जरूरी है।

जिन खाया सोई मुआ करम धरम बड़ कूप।
सतगुरु कहे कबीर से जग मैं जुगत अरूप।।

कबीर साहब कहते हैं, ''जिसने भी इसे चख लिया वह खत्म हो गया। उसकी दुनिया में बेइज्जती हुई चाहे वह राजा है चाहे ऋषि- मुनि है।'' इन्द्र देवता गौतम ऋषि के घर यह स्वाद चखने गया अभी भी इन्द्र को फटकारें पड़ती है और चंद्रमा को कलंक लगता है। इसमें छोटे-बड़े का सवाल नहीं।

कबीर साहब कहते हैं, ''सतगुरु ने हमें बहुत अच्छी युक्ति बताई है कि जिस तरह लैम्प जलता हो तो चोर नहीं आते। उसी तरह काम से बचने के लिए आप नाम में अपनी सुरत लगा दें।'' आप फिर समझाते हैंः

मुसाफिर जागते रहना नगर में चोर आते हैं।
जरा सी नींद गफलत में देख झटपट गठरी उठाते हैं।।

आप सोए होते हैं इस शरीर नगर में चोर आते हैं। जब काम, क्रोध का वेग आता है तो सोते हुए को उठा लेता है। जरा सी नींद गफलत में देखते हैं उसमें नाम प्रकट नहीं होने देते, लूट लेते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैंः

लूट लए साकत पत्त खोए, साध जना पग मल मल धोए।।

उसे लूट लेते हैं उसकी बेइज्जती करते हैं लेकिन मालिक के प्यारों के पैर मल-मल कर धोते हैं।

जगत पास से लेते दान गोविंद भक्त को करे सलाम।

ये दुनियादारों से दंड लेते हैं क्योंकि दुनियादारो ने इनका माल खाया होता है, मालिक के प्यारों को सलाम करते हैं। सन्त समझाते हैं कि हे आत्मा! तू सतपुरुष की बच्ची है। तूने किसी राजा-महाराजा से शादी करवाकर रानी बनना था लेकिन मन भंगी के साथ शादी करवाकर गंद उठाती फिरती है। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''इस आत्मा की ऊँची कुल थी लेकिन प्यादों का साथ लेकर इसने अपनी इज्जत बर्बाद कर ली।''

कामी तो निर्भय भया, करे न कबहूँ संक।
इन्द्रिन केरे बस पड़ा, भोगे नर्क निसंक।।

यह इन्द्रियों के पीछे लगकर कहता है कि मुझसे कौन सा किसी ने हिसाब-किताब पूछना है? मैं जो मर्जी करुं! दस इन्द्रियां- पाँच कर्म इन्द्रियां और पाँच ज्ञानेन्द्रियां हैं। ये इन्द्रियां अपना नाच नचा रही हैं, यह इनके पीछे लगकर नर्कों का हकदार बनता है।

हिन्दुस्तान में आम सन्त-महात्मा कहते हैं कि पच्चीस साल तक विद्या पढ़े, ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करें। उसके बाद ग्रहस्थ आश्रम में जाएं एक-दो बच्चे पैदा करें उसके बाद सन्यास आश्रम में प्रवेश करें। हमारे बुजुर्ग यही किया करते थे। आजकल लोगों ने गृहस्थ को व्यापार बनाया हुआ है, चाहे दस लड़के हो जाएं हम तब भी भजन की तरफ नहीं आते।

कबीर कामी पुरुष का संशय कबहू न जाए।
साहिब से न लग रहे वाके हृदय लाए।।

कबीर साहब कहते हैं, ''कामी को हमेशा यह लगता है कि मैं बुराई कर रहा हूँ, उसके अंदर मालिक प्रकट नहीं होता। परमात्मा

सुच्चा और पवित्र है जब तक हम उतने पवित्र नहीं हो जाते तब तक परमात्मा हमारे अंदर प्रकट नहीं हो सकता।''

काम क्रोध मद लोभ की जब लग घट में खान।
कहाँ मूर्ख कहाँ पंडिता दोनों एक समान।।

कबीर साहब कहते हैं, ''किताबों का ज्ञान कराने वालों के अंदर जब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की गाँठ है उतनी देर मूर्ख और पंडित दोनों एक समान है। हमें इनसे बचना चाहिए, कल्पना को रोकना चाहिए, संयम में रहना चाहिए, ऐब से बचना चाहिए, मन को रोकना चाहिए। काम से रूह गिर जाती है, क्रोध से ख्याल फैल जाते हैं लोभी आदमी इस तरफ आ ही नहीं सकता।''

चाहे वैरागी है, चाहे त्यागी है, चाहे गृहस्थी है यह हर एक के लिए लाजमी है। ऐसा न सोचें कि यह त्यागी के लिए लाजमी है गृहस्थी के लिए छूट है। पिछले जमाने में सन्त-महात्मा हर एक को सयंम में रहने का उपदेश देते थे। आज भी यही कहते हैं कि आप इनसे बचें। कबीर साहब कहते हैंः

नार पराई आपनी भोगे नर्के जाए।
आग आग सब एक है हाथ दिए जल जाए।।

आग जलाकर देखें चाहे वह अपनी आग है या दूसरे की आग है, आग में हाथ डालने से हाथ जल जाएगा। कबीर साहब के कहे मुताबिक हमें इस बीमारी से बचना चाहिए, मन को रोकना चाहिए। हमने जिस शौंक से नाम लिया है उस शौंक से इसका पालन भी करना चाहिए। कबीर साहब कहते हैंः

जैसी लौ पहले लग्गी तैसी निबहे ओड।
अपनी देह की क्या गत तारे पुरुष करोड़।।

सतगुरु के साथ जैसा प्रेम पहले लगा है अगर सारी जिंदगी सतगुरु के साथ वैसा ही प्रेम निभ जाए, अपना तरना तो क्या करोड़ो पुरुषों को भी तार सकता है।

काम काम सब कोई कहे काम न चीन्हे कोय।
जेति मन की कल्पना काम कहावे सोय।।

कबीर साहब कहते हैं, ''आपकी सारी कल्पना काम में ही है। आत्मा ने नाम का रस लेना था लेकिन वह तो कल्पना में ही फिरती है। हम सारा दिन जो करते हैं यह कल्पना है कि मेरी इतनी जायदाद बन जाए। मेरे सारे काम बन जाएं। मेरे पास दुनिया का धन-दौलत आ जाए। मेरे पास अच्छी-अच्छी कारे-जीपें हों। मेरा अच्छा घर बन जाए चाहे दुनिया भूखी मर जाए यह सब कल्पना है। हम अपने भाग्य पर विश्वास नहीं करते कि हमारे भाग्य में जो लिखा है वह हमें अवश्य मिलेगा।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गरीबी-अमीरी, बीमारी-बेरोजगारी, सुख-दुख ये छह चीजे हर इंसान अपनी किस्मत में लिखवाकर लाता है जो उसे अवश्य भोगनी पड़ती हैं।'' कल्पना करने से कुछ नहीं होता। कल्पना करके यह दिन-रात अपनी आत्मा को मैली कर रहा है, हमें इससे बचना चाहिए।

हमें भजन की कल्पना करनी चाहिए। नाम की कल्पना करनी चाहिए कि मेरा भजन क्यों नहीं बनता, मेरा नाम के साथ संपर्क क्यों पैदा नहीं होता, मैं सतगुरु के देश क्यों नहीं जाता? हमारे मस्तक में जो लिखा है वह हमें अवश्य मिलेगा, मिलकर रहेगा।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

तृष्णा

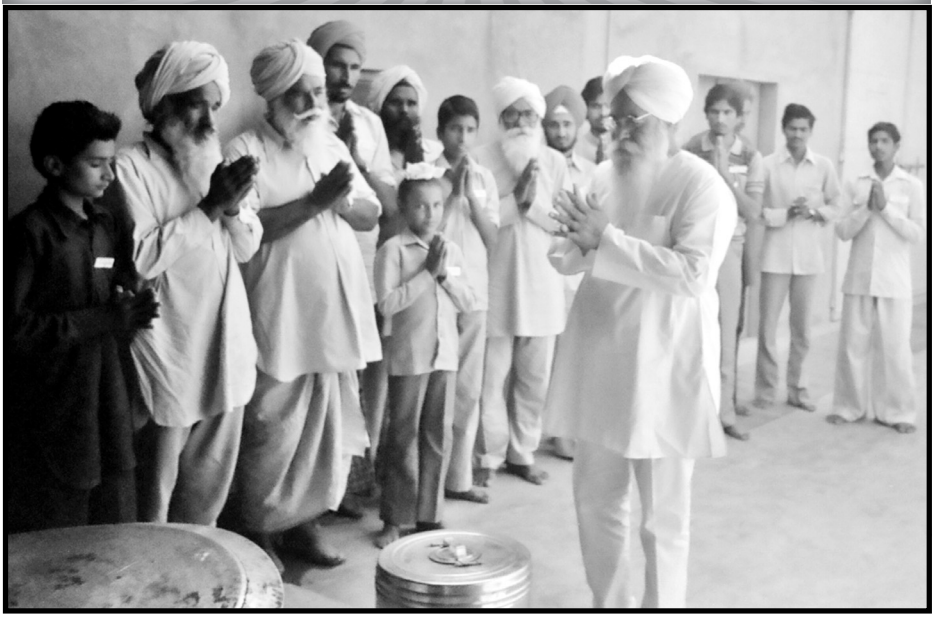

एक आदमी ने महात्मा की बहुत सेवा की। महात्मा उससे बहुत खुश हुए। महात्मा ने उस आदमी को चार बत्तियाँ देकर कहा, ''एक बत्ती एक दिशा में ले जानी है जहाँ बत्ती बुझ जाए वहाँ पर धरती खोदनी है वहाँ से जो मिल जाए उस पर सब्र करना है।''

वह आदमी एक दिशा में गया। जहाँ बत्ती बुझी उसने धरती खोदी वहाँ से उसे रूपये मिले। उसके दिल में ख्याल आया कि दूसरी बत्ती भी जलाई जाए!

जब वह दूसरी बत्ती जलाकर दूसरी दिशा में गया जहाँ बत्ती बुझी उस जगह उसने धरती खोदी वहाँ से उसे मोहरें मिलीं। फिर उसके दिल में ख्याल आया कि अब तीसरी बत्ती भी जलाई जाए।

तब वह तीसरी बत्ती लेकर तीसरी दिशा में गया जहाँ वह बत्ती बुझी उसने खुदाई की वहाँ से उसे हीरे-मोती मिले। उसकी **तृष्णा** और ज्यादा भड़क उठी।

अब वह चौथी बत्ती लेकर चौथी दिशा में गया। जहाँ पर वह बत्ती बुझी उसने उस जगह खुदाई की। वहाँ उसे बना बनाया मकान मिला जिसमें एक दरवाजा था। वह दरवाजे से मकान के अंदर गया। वहाँ उसे एक इंसान मिला जिसके सिर पर छत का वजन था और वह इंसान बहुत घबराया हुआ था। इस आदमी ने उस इंसान से पूछा, ''क्या कुबेर का धन यहीं पर है?''

उस इंसान ने कहा, ''हाँ! तू अपना सिर मेरी जगह दे, मैं फारिग होकर तुझे बता सकता हूँ।'' जब इसने अपना सिर छत के नीचे दे दिया तो उस इंसान ने कहा, ''मैं भी तेरी तरह ज्यादा **तृष्णा** के कारण ही यहाँ फँसा था। अब तेरे जैसा कोई और तृष्णालु आएगा वह तुझे यहाँ से निकालेगा, तब तक तुम यहीं इंतजार करो।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

लख जोड़े करोड़ जोड़े, मन परे परे को होड़े रे।

इंसान की ख्वाहिशें ही इंसान को कंगाल बनाए रखती हैं।

***

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम

17, 18 व 19 मई 2019,

कम्युनिटी हॉल, भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार (नजदीक पीरागढ़ी)

नई दिल्ली – 11 00 87

98 10 21 21 38 व 98 18 20 19 99